उस क़ौम को शमशीर की हाजत नहीं रहती, हो जिसके जवानों की ख़ुदी सूरते फ़ौलाद।
– इक़बाल

ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल
(मासिक)

रजिः *RAJH/9396* संयुक्त अंक (फरवरी व मार्च) : 2009 वर्ष –16 अंक 8 मूल्य 3 रु वार्षिक 35/– रु.

उदयपुर में गम-ए-हुसैन मनाया गया

हिज़री सन् का पहला महीना अपने साथ नये साल की खुशीयां और साथ विषाद दोनों लेकर भी आता है। दुनिया के इतिहास में जुल्म और जब्र के खिलाफ किसी भी रहनुमा ने इतनी बड़ी कुरबानी नहीं पेश की जितनी कि इमाम हुसैन अ.स. उनके अहले बैत व साथीयों ने पेश की। नये साल के इस पहले महीने की इस्लाम में बहुत अहमीयत है हर फिरका इसे अपने अपने तरीके से पूरी इज्ज़त ओ अहतराम से मनाता है।

बोहरा यूथ ने अपने वजूद के साथ इस तहज़ीब को पूरी खूबी के साथ अजांम देना शुरू किया जो मोहर्रम के माह में इमाम हुसैन अ.स. की शहादत को सजीव बना देता है।

मोहर्रम की पहली तारीख से शहादत की रात तक सारे बोहरा मोहल्लों में सबीले एहले इस्लाम बच्चों की जानिब से अपने अपने तरीके से बांधी जाती है।

बोहरा रिवायत के मुताबिक दूसरी तारीख से दस तारीख तक सुबह 10.00 बजे से दोपहर 2.00 बजे तक होने वाली वाअ्ज में जाकिरीने हुसैन करबला के शहदों की याद में मरसीयाह ख्वानी करते है और उलुमाओ की जानिब से कुरआन, शरीयत और नहजुल बलागाह की रोशनी में इस्लामी रिवायातों पर मुख्तसिर रोशनी डाली जाती है। मजलिस के अखिरी 15 से 20 मिन्टों में जिक्रे शहादत इमाम हुसैन अ.स. होता है।

इस साल सुबह होने वाली वाअ्ज मालेगांव से तशरीफ लाये डॉ मेहदी हसन साहब ने समाद फरमायी, मरसिया ख्वानी की रस्म में जनाब असगर अली जावरिया वाला, मोईज अली व मुजम्मिल हुसैन की पार्टीयों के अलावा कई जाकिराने हुसैन ने पूरी की।

शाम को होने वाली गर्ल्स विंग की मजालिस में इमाम अली मुकाम की शान में तकरीर मोहतरिमा जीनत खाखड़ वाला ने समाद फरमायी व मोहतरिमा फातिमा बाई व दीगर ख्वातीन ने मरसिया ख्वानी की। रात को होने वाली मजलिसों मे जिक्रे इमाम हुसैन के साथ इस्लामी अकायद और उमूर पर तकरीर मुल्ला पीर अली खाड़ा गुरा वाला ने फरमायी व ज़ाकिरीने हुसैन ने मरसीयाह ख्वानी की।

शामें गरीबा हस्बे दस्तूर डॉ अब्बास अलवी ने पढ़ी, नोहा व रूखसती सलाम जनाब असगर अली जावरिया वाला ने समाद फरमाया।

मोहर्रम महीने में यह शर्मनाक दिन भी

मुहर्रम का महीना तारीख 26 और 27 मुताबिक़ 28 फरवरी और एक मार्च 1975 ई.। मुक़ाम गलियाकोट। सैयदी फ़ख़रूद्दीन शहीद के उर्स का मौक़ा। हज़ारों मर्दों और औरतों का मजमा। सैयदना मोहम्मद बुरहानुद्दीन साहब की मौजूदगी।

एक सोची समझी साज़िश के तहत मज़हब के ठेकेदारों, अंधविश्वासियों और ख़ुदग़र्ज़ों ने बोहरा यूथ की मज़लूम औरतों और मर्दों पर बेग़ैरती से जान लेवा हमले किये। जिसमें मर्दों और औरतों ने कई–कई मील जंगल में भाग कर अपनी जान और इज़्ज़त बचाई। उस दिन फ़ख़री मज़ार लरज़ गया था। इन्सानियत शर्मा गई थी और सफ़ेद पोशो का मुंह काला हो गया था। क़ुदरत तमाशाई थी। इसका हिसाब सिर्फ अल्लाह के पास।

यह दिन दाऊदी बोहरों की तारीख़ का काला दिन है। इस दिन ज़ालिमों की मज़म्मत करना हर मोमिन का फ़र्ज़ है।

– इदारा

बोहरा यूथ के होनहार स्टूडेन्ट्स आगरा में सम्मानित

प्रगतिशील और सुधारवादी दाऊदी बोहरा (बोहरा यूथ) के लगभग सभी लोग शिक्षित हैं। लोग अंधी अकीदत से दूर होकर आजादी की ज़िन्दगी जीकर दिन ब दिन दीनी और दुनियावी ज़िन्दगी में तरक्की कर रहे हैं।

ऐसा होना स्वाभाविक भी है, क्योंकि बोहरा यूथ पब्लिक स्कूल, विभिन्न स्कोलरशीप देने वाली ट्रस्ट एवं स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसायटी जैसी संस्था द्वारा किताबें मुहईया करवाने के साथ–साथ, समय–समय पर ऐज्यूकेशनल केम्प, सेमीनार, अरबी क्लासेज़ और टूर्नामिन्ट सहित विभिन्न क्षेत्रों में स्टूडेन्ट को सम्पूर्ण शिक्षित कर जहाँ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी जाती है, वही दी बोहरा वेलफेयर सोसायटी जैसी संस्थान हर साल सर्वश्रेष्ठ नम्बर से पास हुए कौम के सौ से ज़्यादा छात्र–छात्राओं को माँ फातिमा–तुज–ज़ेहरा (अ.स.) की शहादत की मज़लिस में इनाम देकर शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए हौंसला अफ़्ज़ाई करती हैं। और इसी तरह हाजी मुल्ला ईस्माईल जी अत्तर वाला अवार्ड देकर कौम में शिक्षा, कल्चरल (cultural) और खेल कूद के क्षेत्र में अव्वल रहे छात्र–छात्राओं को विभिन्न क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

27 दिसम्बर, 2008 को आगरा शहर में अमेरिकन फेडरेशन ऑफ मुस्लिम ऑफ इण्डियन ऑरिजन द्वारा आयोजित 17वें इन्टरनेशनल कांफ्रेस ऑन ऐज्यूकेशन और गाला अवार्ड समारोह में बोहरा यूथ स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसायटी से जुड़े तीन स्टूडेन्ट्स को सम्मानित किया।

हर राज्य से तीन–तीन मुस्लिम छात्र–छात्राओं को सम्मानित किया, उनमें राजस्थान राज्य से उदयपुर के अलमास तैयब हुसैन जयपुरी, सुहैल अब्बास साबुन वाला और सानिया पच्चीसा को स्वर्ण, चॉदी एवं कांस्य पदक सहित रू.5000/–, रू.3000/–. एवं रू.2000/– नकद देकर सम्मानित किया गया।

सम्पूर्ण भारत से सबसे अधिक प्रतिशत से उत्तीर्ण होने वाले 5 स्टूडेन्ट जिनमें 92.40 प्रतिशत हासिल करने वाली बोहरा यूथ की अलमास जयपुरी को केन्द्रीय मंत्री श्री राम विलास पासवान द्वारा प्रंशसा पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इन उपलब्धियों से ना सिर्फ उदयपुर बल्कि सभी दाऊदी बोहराओं का सर फख्र से ऊँचा हो गया है।

हमारा सवाल: तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को किस तरह प्रोत्साहित किया जाए ? आपके सुझाव !

The role of youngsters in our movement. How can we encourage them to join in?

Please send your contribution to: The Editor : All World Bohra Journal , 73 Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

इदारिया

"मोमिन की यह पहचान कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़"

कौआ घमंड से कहे कि मैं हंस हूँ और गीदड़ शेख़ी से कहे कि मैं शेर हूँ, तो न तो कौआ हंस हो सकता है और न गीदड़ शेर बन सकता है। उसी तरह अपने आपको मोमिन कहने या कहलवाने से आदमी मोमिन नहीं हो जाता। मोमिन बनने के लिये ईमान और किरदार चाहिये। जिसकी हिदायत अल्लाह के रसूल ने फरमाई है। अल्लाह के अहकामात पर सुपुर्दगी और रसूले करीम (स.अ.) के सुन्नत की पैरवी चाहिये, मोमिन के लिये पंजतन पाक और उनकी औलाद की विलायत चाहिये। उनकी पाक सीरत से सबक़ लेकर अपनी ज़िन्दगी को राहे–रास्त पर ले जाने की हिम्मत चाहिये। झूठ के सामने सच और बातिल के सामने हक़ का इज़हार करने, ज़ुल्म के सामने सीना तान कर खड़े होने की जुरअत चाहिये।

बुलन्द अख़लाक़ी, पाकीज़गी, रोशन दिमागी, फराख़ दिली, इन्सानी हमदर्दी मोमिन के ओसाफ़ हैं। मोमिन का ज़ाहिर और बातिन एक होता है। मोमिन दुनिया पर आख़िरत को तरजीह देता है, जिसकी मिसाल अल्लाह के रसूल (स.अ.) और उनके वसी मौलाए–कायनात अली बिन अबीतालिब की ज़िन्दगियों से मिलती है, जो तख़्त और ताज के मालिक थे पर चटाई और बोरियों को ही अपनी मसनद बनाते रहे और बिना तमतराक़ और शानो–शोकत के अज़ीमुशशान ज़िन्दगी बसर करते रहे।

मोमिन अल्लाह के प्यारों का बन्दा होता है। किसी बादशाह का गुलाम नहीं होता और न ही वह किसी को गुलाम बनाता है। जिसका सुबूत शहीदे–आज़म इमाम हुसैन (अ.स.) ने यज़ीद की बेअत से इन्कार करके दिया। मोमिन ज़ुल्म बरदाश्त नहीं कर सकता, फिर वह चाहे किसी पर हो रहा हो। वह उसके ख़िलाफ मुक़ाबले पर आ जाता है और राहे–खुदा में जिहाद करता है। जैसा रसूल (स.अ.) के नवासे ने मैदाने–करबला में दुनिया को दिखा दिया।

अमीरूल मोमिनीन अली (अ.स.) ने लड़ाई के मैदान में दुश्मन को पछाड़ करके भी इसलिये छोड़ दिया कि कहीं उनके खुद का गुस्सा जिहाद में शामिल न हो जाए। आपने दुश्मन की बेहुदा हरकत पर भी गुस्सा और नफ़रत का इज़हार नहीं किया। उसी तरह इमामे–मज़लूम ने भी खंजर के रगड़ों की बेपनाह तकलीफ को बरदाश्त करते हुए भी नफ़रत का इज़हार नहीं किया, बल्कि सब्र की आखिरी हद को पार करते हुए उम्मत के हक़ में दुआएं ही दी। किसी भी हालत में आपने "बराअत" का हुक्म नहीं दिया। क्योंकि यह मोमिनों का काम नहीं।

मोमिन का दिल आईना होता है, जिसमें उसके खुलूस की झलक साफ़ नज़र आती है। वह इन्सानों को जोड़ता है, उनमें जुदाई नहीं पैदा करता। वह अल्लाह के बन्दों को उसकी दुनिया में आज़ादी से जीने का हौंसला देता हैं, गुलामाना ज़हनियत नहीं पैदा करता।

मोमिन एक अल्लाह की ज़ात में किसी की शिरकत गवारा नहीं कर सकता। वह मस्जिदों में अल्लाह की इबादत के लिये आने वालों को नहीं रोकता। वह मैयत की ज़िल्लत नहीं करता। वह अल्लाह के आगे सिर झुकाने वालों को अपने आगे झुकने पर मजबूर नहीं करता। वह औलियाओं की दरगाहों और मज़ारों पर अक़ीदत और अहतराम से जाने वालों के रास्ते नहीं रोकता। वह अल्लाह के बन्दों का मालिको–मुख़्तार नहीं होता। वह उनकी जान और माल का मालिक नहीं होता। वह रसूले –करीम (स.अ.) की हदीस "अल मोमिनों अखुल मोमिन" (मोमिन, मोमिन का भाई हैं) की तस्दीक़ में अमल करता है। उसका मुन्किर नहीं होता।

अज़ादारी की मज़ाक बेग़ैरती है

कर्बला के वीरान जंगल में इमामे–मज़लूम, उनके अहले बैत और वफ़ादार रफ़ीक़ों की क़ुरबानी इन्सानी तारीख़ का वह बाब है, जिसे रहती दुनिया तक नहीं भुलाया जा सकेगा। इमामे–मज़लूम का नाम आते ही आँखें नम हो जाती हैं, मन उदास हो जाता है और ख़ास कर मोहर्रम के दिनों में आशूर के दिन तो रंजो–गम का अहसास और भी बढ़ जाता है।

हमारे यहां उदयपुर में मोहर्रम के दस दिनों तक वाइज़ों, मजलिसों नियाज़ों की रिवायत बहुत पुरानी हैं। इसी तरह आशूर के दिन मस्जिद मोइयदपुरा से "नोहे" पढ़ते हुए मस्जिद वज़ीरपुरा तक मातमी जुलूस के साथ जाना भी क़दीम से होता आया है। इस दिन उसे रोक पाना मुमकिन ही नहीं होता।

लेकिन कुछ शरारती लोग कुछ सालों से इस जुलूस में गड़बड़ी फैलाने की फ़िराक़ मे रहते हैं। इस बार मातमी जुलूस में हंगामा करने की इन्हीं लोगों ने साज़िश की जो काबिले मज़म्मत (निन्दनीय) है।

इस दिन लोग जुलूस के दौरान और मस्जिद में भी जो मातम करते हैं, वह रंजो–ग़म के फितरी ज़ज़्बे के तहत ही होता है। वह बनावट नहीं होती। उस पर हंसना और मज़ाक़ करना बेग़ैरती है और उस मंज़र की याद दिलाती है, जब कर्बला के मज़लूमों का लुटा हुआ क़ाफ़िला कूफ़ा और शाम के बाज़ार से बेबसी के साथ गुज़र रहा था और औरतें मकानों के ऊपर से खुशनुमा लिबास पहने मज़ाक कर रही थी और हंस रही थीं। इमाम हुसैन (अ.स.) के अज़ादारों पर यह मंज़र एक अलमनाक हादसा है और भारी सदमा है। साथ ही अलम को तोड़ना भी मज़मूम हरकत है। बेशक इमाम मज़लूम के अज़ादारों के साथ इस तरह की हरकत मोमिनों का शैवा नहीं।

- आबिद अदीब

बोहरा यूथ की मुजाहिद ख्वातीन

खदीजा बाई पलाना वाला

खदीजा बाई पलाना वाला यूथ की एक कर्मठ खातून है। आप 70 साल की है और इस ज़िन्दगी में बोहरा यूथ की तहरीक में हुए सभी उतार–चढ़ाव को बहुत नज़दीक से देखा है।

आपने बताया कि कई साल पहले मोहर्रम की नवीं तारीख को जमात के बड़े मेम्बरों को मज़लिस में से उठा लिया गया। उस दौरान उदयपुर में शहजादा साहिब जनाब काइद जौहर गज़ करने आए थे। उनको कई लोगों ने ज़ियाफत पर बुलाया और सलाम वगैरह भी दिए मगर उदयपुर वालों की एक गलत तस्वीर उन्होंने मुम्बई में पेश की, जिसका खामियाज़ा उदयपुर वालों को काफी वक्त तक भुगतना पड़ा।

मोहर्रम की छठीं तारीख का मोईयदपुरा मस्जिद में यूथियों पर जो भी ज़ुल्म हुए, आप उसकी चश्मदीद रह चुकी हैं। आपने बताया कि सभी लोगों ने सारी रात इबादत की और मर्सिये पढ़कर अल्लाह से सब्र और हिम्मत मांगी। अगले दिन जो ज़्यादतियाँ हम पर की गई, उससे हम सभी वाक़िफ़ हैं। उसके बाद के सालों में भी छोटे–बड़े झगड़े होते ही रहते थे। इन झगड़ों के बाद शबाब वालों ने जमात से अलग होकर जगह ले ली जहाँ पर शबाब के लोगों को खाना खिलाने का इंतज़ाम किया गया।

उन्होंने बताया कि हमारे अपने लोगों की बदमाशी और धोखे बाज़ी की वजह से हमारी तहरीक ने बहुत कुछ खो दिया। मोईयदपुरा की मस्जिद हम यूथियों की होते हुए भी शबाब गुट के लोग उस पर काबिज़ हैं। शबाब गुट के लोग खुदा के घर में भी गलत हरक़तें करने से गुरेज़ नहीं करते। मोईयदपुरा मस्जिद में जो हदबंदी की गई वो एक बहुत ही शर्मनाक हरकत है। ऐसा माना जाता है कि अल्लाह के घर में ऊँची आवाज में बात करना भी गलत है, मगर शबाब गुट के लोग मस्जिद में गाली–गलोज और मारपीट करने से भी बाज़ नहीं आते।

आपने सारी उम्र मोईयदपुरा मस्जिद में इबादत की और आपके सभी फरज़न्द भी इसी मस्जिद में नमाज अदा करने जाते हैं। आपका पूरा खानदान इस movement से जुड़ा हुआ हैं। आप के खाविंद मुल्ला बाकिर अली पलाना वाला जमात सबील के मेम्बर थें। आपकी बेटी बिल्किस बानू बरोड़ा वाला जमात की एक जागरूक कार्यकर्ता है व फ्री सबीलिल्लाह दीनी क्लासे लेती है और बोहरा यूथ के सभी मोर्चो पर वो हमेशा आगे रहती हैं।

खदीजा बाई का कहना है कि हमें शबाब गुट के लोगों को खुद पर हावी नहीं होने देना चाहिए और नई पीढ़ी को अपने बुज़ुर्गों से नसीहत लेकर अपनी कौम की तरक्की के लिए हमेशा काम करते रहना चाहिए।

अल्लाह आपको उम्रदराज़ और सेहतमंद रखें। आमीन!

- ज़ीनत बानू खाखरवाला

लन्दन से आए सुधारवादी अतिथि का स्वागत

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमाअत की ओर से इंग्लैण्ड के शहर लन्दन से आए सुधारवादी जनाब मोहसिन सुलेमानजी का कम्यूनिटी हॉल में दिनांक 17–01–2009 पारम्परिक एवं भव्य रूप से स्वागत किया गया।

इस अवसर पर दाऊदी बोहरा जमाअत के अध्यक्ष जनाब आबिद अदीब ने सुधारवादी आंदोलन के इतिहास की जानकारी दी। इस आंदोलन में महिलाओं के योगदान की सराहना करते हुए कहा कि सुधारवादी आंदोलन के इतिहास को कभी भुलाया नहीं जा सकता। आंदोलन की असली ताकत इसके उद्देश्यों से सहमत होना है, यह आंदोलन बहुत प्रभावी है, खासकर युवा पीढ़ी में इस विचारधारा को लेकर उत्साह है और वे इससे जुड़ना चाहते है। समाज की मुख्यधारा इस समय बोहरा यूथ के हाथों में हैं। जमाअत के सचिव, जनाब गुलशन अब्बास नाथजी एवं डॉ. अब्बास अलवी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि जनाब मोहसिन सुलेमानजी ने लन्दन एवं कनाडा में हुए दाऊदी बोहरा कॉन्फ्रेन्स, सुधारवादी आंदोलन की गतिविधियों एवं फातिमी ट्रस्ट की जानकारी दी। मोहतरमा तसनीम सुलेमानजी ने आंदोलन में महिलाओं के योगदान की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसाइटी के सदस्यों ने सोसाइटी के उद्देश्यों एवं गतिविधियों की अतिथियों को जानकारी दी।

दाऊदी बोहरा जमाअत एवं बोहरा यूथ के सभी ईकाइयों के प्रतिनिधियों के साथ महिलाएं भी अधिक संख्या में मौजूद थी।

समर्थन की सराहना

बोहरा यूथ एवं दाऊदी बोहरा जमाअत की ओर से बोहरा जमाअत खाना, निकाह हाल में एक सभा का आयोजन प्रो. मुल्ला मेहदी हसन साहब की अध्यक्षता में किया गया। इसमे मुल्ला पीर खान साहब, डॉ. अब्बास अलवी तथा अन्जुमन ज़ाकिरीने हुसैन, अन्जुमन फिदायने हुसैन, बोहरा यूथ मेडिकल एण्ड रिलिफ सोसाइटी, स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसाइटी तथा बोहरा यूथ गर्ल्स विंग के सदस्यों का मोहर्रमुल हराम के अशराह मुबारक में सेवाएं प्रदान करने तथा आयोजन को सफल बनाने एवं 111 सदस्यों के रक्तदान करने पर सभी इकाइयों के सहयोग एवं समर्थन की सराहना करते हुए दाऊदी बोहरा जमाअत के अध्यक्ष जनाब आबिद अदीब एवं जमाअत के सचिव, जनाब गुलशन अब्बास नाथजी वाला ने धन्यवाद दिया।

– हुसैन उदयपुरी

इस राह में इन्सान का चारा नहीं कोई

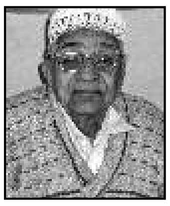

जनाब इब्राहिम अली वागपुरा वाला का इंतिकाल 28 जनवरी 2009 को हो गया। मरहूम हालांकि 92 साल के बुजुर्ग हो चुके थे, लेकिन बोहरा यूथ के लिए उनका जज़्बा उसी तरह वलवला अंगेज था, जिस तरह जवानी में था। अपने लोगों के बीच उनकी अच्छी साख थी। ईमानदारी, मिलनसारी और खुश–मिज़ाजी अपने–भाइयों की तरह जिनके मिज़ाज में भी दाखिल थी। मरहूम अपना भरा–पूरा परिवार छोड़ गये। अल्लाह उन्हें जन्नत नसीब करें। आमीन !

हजानी रूकैयाबाई साबुन वाला भी तारीख 28 जनवरी बरोज़ बुधवार को 90 साल की उम्र में इस फानी दुनिया से रूख़सत हो गई। भरपूर जिन्दगी जी कर अपने पूरे परिवार को तो आत्म–सम्मान से जीने का चलन सिखाया ही था, लेकिन उदयपुर के तमाम मूमिनीन के दिलों में अपनी खास जगह बना ली थी। यही वजह थी कि मरहूमा के जनाज़े में सभी तरह के लोग खासी तादाद में शरीक थे। मरहूमा के ख़ाबिन्द हाजी ईस्माइल अली साबुन वाला भी ऐसी ही हरदिल–अजीज़ शख्सियत के मालिक थे। चमनपुरा की मस्जिद में बरसों तक अज़ान देने, नमाज पढ़ाने की खिदमत अंजाम देते रहे। आज भी उन्ही के नक्शे–कदम पर चलते हुए उनके फरज़न्द शफीउद्दीन साबुन वाला भी यही खिदमत अंजाम देते हुए समाज–सेवा के कामों में भी अपना भरपूर तआवुन देते है। यह सब बुजुर्ग माँ–बाप की हिदायतों का ही नतीजा है। अल्लाह मग़फिरत करें। आमीन !

इस माह में एक खामोश कारकुन को भी मौत का सामना करना पड़ा है। ज़ाकिर हुसैन सलोदा वाला भी 66 साल की उम्र में अपनी बीवी और एक बच्ची को छोड़ कर इस आलम से उस आलम की तरफ रहलत कर गये। मरहूम मेहनती और ईमानदार थे। बचपन से ही रोजगार के लिये जूझने वाले ज़ाकिर मिलनसार और खुश–मिजाज थे। अपने काम से काम रखते थे। वज़ीहपुरा की मस्जिद में भी इन्होंने एक अच्छे कारकुन की हैसियत से अपनी खिदमत दी थी। यूथ के हामी थे। अल्लाह उन्हें मग़फिरत करे और परिवार को सब्र दें। आमीन !

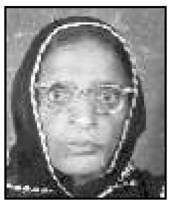

एक सौ पांच साल की बुजुर्ग ख़ातून सुगरा बाई भी ता. 30 जनवरी बरोज़–शुक्रवार को अपने सात बेटों और एक बेटी को छोड़ कर अल्लाह को प्यारी हो गई। मरहूम सुगरा बाई ने भी अपने शोहर सफदर अली मोटागाम वाले के आधी सदी से भी ज्यादा बरसों पहले छोड़ देने के बाद कई उतार–चढ़ाव देखे है। आज उनका पूरा परिवार हरी–भरी फुलवारी की तरह है। मोइयदपुरा मस्जिद के सामने रहने वाली इस खातून के घर पर कई बार हमले किये। घर में तोड़–फोड़ की, लेकिन खुद मरहूमा और उनके फरज़न्दों में से किसी ने हिम्मत नहीं हारी। खुदा इन सबको साबित कदम रखें। आमीन !

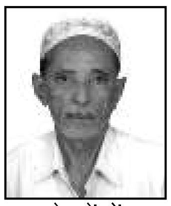

भाई याकूब अली ब्यावर वाला मुख्तसिर सी बीमारी के बाद रहलत कर गए। मरहूम अपने पीछे दो लड़किया और एक लड़का छोड़ गए है। मरहूम याकूब अली कमगो, ईमानदार, मेहनती और खुश मिज़ाज़ थे। यूथ की इस्लाही तहरीक के हामी थे। अपनी मसरूफियात की बिन्हा पर जलसों और कान्फ्रेन्सों में कम शिरकत करते थे, लेकिन उसूल के पक्के थे और उसी पर आखिरी दम तक कायम रहें। अल्लाह उन्हें मगफिरत करें और उनके वारेसान को सब्र अता करें। आमीन !

मोहतरमा सुगरा बाई खोलिया वाला अचानक दारेफानी से कूच कर गई। वह 90 साल की थी। वह अपने पीछे तीन लड़के और तीन लड़किया छोड़ गईं हैं। मरहूमा खुशमिज़ाज़, मिलनसार और पक्के इरादे वाली खातून थी।

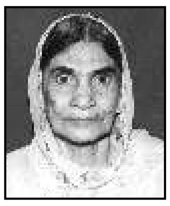

बरसों पहले अपने खाविन्द के इंतिकाल के बाद अपने छोटे–छोटे फरज़ंदों की परवरिश की जिम्मेदारी बखूबी निभाती रही। बोहरा यूथ तहरीक की हिमायत में आखिर दम तक रही। मोइयदपुरा मस्जिद में नमाज पढ़ने जाया करती थी, उस मस्जिद को कभी नहीं छोड़ा। अगरछे उस मस्जिद में उनके साथ गुस्ताखियाँ की गई और मारपीट भी की गई फिर भी उनके इरादों में कोई फर्क नहीं आया। खुदा मरहूमा को जन्नत नसीब करें और उनके करीबदारों को सब्र जमील। आमीन !

15, फरवरी। मोहतरिमा खदीजा बाई सबील वाला 73 साल की उम्र में दारेफानी से रहलत फरमा गयी। आप बोहरा यूथ की सरगर्म रूक्न और तबीयत से बहुत शान्त खातून थी। हमेशा अपने बच्चों को तहरीक के साथ साबित कदम रहने की दरस देती रहती थी। परवरदिगार मरहूम को अपने जवारे रहमत मे जगह इनायत फरमायें और आपके अहलोअयाल को सब्र जमील अता करें। आमीन !

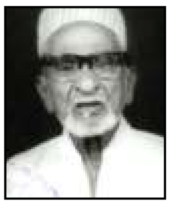

फरवरी 1, जनाब इब्राहीम अली फजीमामी जी वाले 86 साल की उम्र में दारेफानी से रहलत फरमा गये। आपने लम्बे अरसे तक खानपुरा व वजीहपुरा मस्जिद में मुतवल्ली की बोहरा यूथ के सभी फर्द आपकी इस खिदमात को तसलीम करते है और बारगाहे इजदी में दुआगो है कि मरहुम को अपने जवारे रहमत में जगह इनायत फरमाये व पसमांदगान को सब्रे जमील अता करें। आमीन !

इदारा इन तमाम मरहूमीन में खिराजे-अकीदत पेश करता है।

ईमाम हुसैन की शहादत पर 111 यूनिट रक्तदान

उदयपुर, 4 जनवरी मोहर्रम की आठवीं तारीख पर शहादत दिवस मनाते हुए हज़रत इमाम हुसैन की याद में रविवार को बोहरा यूथ मेडिकल रिलीफ सोसायटी द्वारा बोहरवाड़ी स्थित बोहरा यूथ मेडिकेयर सेंटर पर रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में बोहरा समुदाय द्वारा 111 यूनिट रक्तदान किया गया।

शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र प्रसाद गोयल ने किया। अध्यक्षता आर. एन.टी. मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य, डॉ. एस.के. कौशिक ने की। विशिष्ट अतिथि अति. पुलिस अधीक्षक, के.आर. रावत और ब्लड बैंक के प्रभारी नरेन्द्र मोगरा थे।

आरंभ में बोहरा यूथ मेडिकल रिलीफ सोसायटी के अध्यक्ष अनीस मियांजी ने शहादत दिवस पर मुम्बई आतंकी हमले में शहीद हुए लोगों को खिराजे अकीदत पेश की। डॉ. कौशिक ने ब्लड डोनेशन की अहमियत पर प्रकाश डालते हुए इसे सबसे बड़ी मानव सेवा बताया। दाऊदी बोहरा जमात के अध्यक्ष आबिद हुसैन अदीब ने कहा कि खून बहाने की नहीं बल्कि बचाने की जरूरत है। रक्तदान में मिला खून किसी की जान ही नहीं बचाता हैं बल्कि साम्प्रदायिक एकता का प्रतीक भी हैं।

इस अवसर पर बोलते हुए मुख्य अतिथि राजेन्द्र प्रसाद गोयल ने सोसायटी के जज़्बे की प्रशंसा करते हुए कहा कि शहीदों को खिराजे अकीदत पेश करने की इससे बेहतर कोई मिसाल नहीं हैं।

इस शिविर में नारायण सेवा संस्थान, आस्था, आर्ट ऑफ लिविंग, अलख नयन मंदिर, अलनवाज कमेटी, ऑल इण्डिया सिख वेलफेयर सोसायटी, उदयपुर अरबन कॉ ओपरेटिव बैंक एवं बोहरा यूथ की सभी ईकाई ने तहेदिल से योगदान दिया।

कार्यक्रम में के.आर. रावत, डॉ. नरेन्द्र मोगरा, अब्बास अली नाथ ने भी विचार रखे। शिविर में डॉ. एस.एस. सुराणा, डॉ. इसहाक शाह, डॉ. कुलसुम शाह, डॉ. रेहाना बानू, सरफराज राज, हामिद माऊवाला, शब्बीर भरत, अजगर मोमिन, सिराज पलाना, तौसीफ टीड़ी वाला ने अपना सक्रिय सहयोग दिया।

संचालन शब्बीर नासिर ने किया। आभार रेहाना जर्मनवाला ने जताया।

हम हैं बोहरा यूथ

हमने **बो**या हैं सच को अपने आंगन में,
कभी तो महकेंगे हक़ के फूल अपने दामन में।
हम वो नहीं जो हो जाएँ **ह**ताश कभी भी,
छोड़ेंगे ना हम इन्साफ की तलाश कभी भी।
इस अंधेरी **रा**त के बाद आएगी सहर कोई,
लेकर आज़ादी का पैग़ाम आएगी सबा कोई।
यूँ ही बुलंद रहेगी ये आवाज़ हमारी,
देख ले ऐ दुश्मन तू ये परवाज़ हमारी।
वक़्त के **थ**पेड़ों में पलकर बड़े हुए हैं,
मंज़िल से अब हम बस कुछ ही दूर खड़े हुए हैं।
ऐ बेख़बर जान ले हमें, **हम हैं बोहरा यूथ,**
मैने जो कुछ हैं कहा, इसमें कुछ भी नहीं है झूठ।

– ज़ीनत बानू खाखड़ वाला

Letter to the Editor :

आप अपने तअ्स्सुरात और मशविरों से आगाह करते रहें। अधिकतम 200 शब्दों में लिखें।

We invite you to write to us with your views and opinion on any issue. Your letters should not be more than 200 words.

Addressed to: The Editor, All World Bohra Journal, 73, Dr. Zakir Hussain Marg Udaipur 313001, E-mail : bohra.journal@hotmail.com

Expert Speak

Marketing Innovation - Pt II

Strategies for creating awareness

4. Shop Pining Strategy

Once the market has been identified, value for money can be easily justified if backed up by quality. Credibility of a company, which is trying to promote itself, has to be carried across to the audience; 'word of mouth' publicity plays its role here. This assumes importance especially in the ready-to-wear segment, where a variety of options in terms of colours, designs, weaves, styles and pricing exist. Therefore, individuality in the market has not only to be maintained but also projected across.

5. Drifting Strategy

Purchasing should be done on the basis of reliability, price, quality, easy availability, variety, style, discounts, gifts, hampers, future benefits, etc. and these are all the factors, which drifts away the consumers. There are till date only a few customers qualifying positively in all these categories. Here is where awareness is needed.

6. Bargaining Strategy

A reasonable bargaining must be done. This will not only benefit them financially but will also strengthen their position. Cash Memo, commonly called bill, must surely be taken.

7. JIT (Just In Time) Approach Strategy

At the time of purchases only time margin must be taken in case the product does not fit well or there is any other problem, it shall be changed by the retailer. The consumers must be aware that if they have any problem regarding the size it is always changed or altered by the retailer, but should be approached just in time. A request to the shopkeeper is always dealt with due care.

8. Legal Approach Strategy

If care is not taken by the retailer regarding genuine grievances of the customer then they can approach the consumer court, which is very actively working these days. There are consumer protection societies and number of NGOs working in this direction. They organise road shows, lectures and seminars in schools and colleges and education is imparted.

No overnight success can be envisaged. But the essential homework begins at the consumer's end.

- Dr Kaneez Fatima Sadriwala
Professor-cum-Director,
Aravali Institute of Management Studies,
email : moizkaneez@yahoo.com

पिछले माह के जर्नल में हमारा सवाल था :

तहरीक़ को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को किस तरह प्रोत्साहित किया जाये ?

हमारे कुछ पाठक के जवाब -

हिबतुल्ला अत्तारी

तहरीक की यह तारीख हैं कि जब–जब भी हालात बेकाबू हुए और समाज के उसूलों को बालायताक किया गया तब तहरीक की पैदाइश हुई।

इसी तरह जब हमारे समाज के हालात बदतर होने लगे तो तहरीक का बिगुल बजा। शुरूआती दौर में हमारी तहरीक में शामिल लोगों ने तन,मन, धन से बड़े जोश–ओ–खरोश के साथ काम किया। तहरीक कोई research नहीं कि उसका नतीजा जल्द आपके सामने आ जाए। हमें अपनी नई generation के बारे में सोचना और second line तैयार करने की कोशिश करनी चाहिये। तहरीक की पैदाइश के बाद इसकी बागडोर एक generation के बाद दूसरी generation को सौंपते हुए चले जाते हैं, क्योंकि इसकी आखिरी मंजिल का कोई पता ही नहीं होता है।

इसलिये अब वक्त आ गया है कि हम अपने नौजवानों को तहरीक की तरफ प्रोत्साहित करें।

- हमें अपने नौजवानों को सबसे पहले यह समझाना चाहिए कि यह तहरीक मज़हब को बदलने के लिये शुरू नहीं की गई थी, बल्कि समाज में पैदा हुई खराबियों को दूर करने के लिये। इस तहरीक से न तो हम शरीयत को बदलना चाहते हैं और न ही कुरआन शरीफ और न नमाज।
- नौजवानों के लिये साल में दो study camp लगाने चाहिये, जिसमें केवल नौजवानों को ही शामिल किया जाए और यह बिल्कुल कम समय का होना चाहिये।
- नौजवानों को हमारी तमाम कमेटियों में शामिल करना चाहिए ताकि वह इनके काम काज से वाकफियत हासिल कर सके ।
- हमारी जमाअत और बोहरा यूथ में नौजवानों का representation होना चाहिये ताकि यह लोग इस democratic pattern पर चलने वाली संस्था के बारे में जान सके।
- तहरीक की पैदाइश से लेकर आज तक तवारीखी वाकयात का एक मुकम्मल ग्रंथ तैयार किया जाए और यह तमाम नौजवानों में बांटा जाए।
- साल में एक ऐसी प्रदर्शनी रखनी चाहिये, जिसमें हमारें तमाम इदारों और कमेटियों के काम काज का लेखा जोखा हो और जिसमें तहरीक की activities पर रोशनी डाली गई हो।
- स्टूडेन्ट वेलफेयर सोसाइटी के मंच को काम में लेना चाहिये जहाँ ज़्यादा से ज्यादा नौजवान इस काम के लिये प्रोत्साहित किये जा सकते हैं।
- ऐसे नौजवानों पर नजर रखनी चाहिये जो तहरीक के कामों में शौक रखते हो, ताकि उसे तहरीक की हर activities में शामिल किया जा सके।
- मुख़्तसिर तकरीरें और कम वक्त वाले कार्यक्रम रखने चाहिये ताकि हर नौजवान शौक से शामिल हो सके।
- मेरी राय में तहरीक को आगे बढ़ाने के लिये हमारे नौजवानों को ज़्यादा से ज़्यादा प्रोत्साहित करना चाहिये ताकि तहरीक की रफ़्तार में तेज़ी आ सके और तहरीक की बागडोर भी इनके हाथों में रहे।

नासिर जावेद

मैंने वर्ष 1984–85 में स्टूडेन्ट वेल्फयर सोसायटी की सदस्यता ली और वर्ष 1990–91 तक इस सोसायटी के सेक्रेट्री और अध्यक्ष का पदभार संभालते हुए सोसायटी का माहनामा ''रोशनी'' भी निकालते रहा। इससे कब्ल वर्ष 1982–83 में उस ज़माने की स्टूडेन्ट वेल्फयर सोसायटी (जूनियर) जो सेकेण्डरी और हायर सेकेण्डरी के तालिब इल्मों को किताबें देने (book bank) के रूप इमदाद करती थी उसका सदस्य रहा और फिर इस इदारे में सांस्कृतिक सचिव का पदभार भी संभाला। उसके बाद 1997–98 से आज तक बोहरा जमाअत और बोहरा यूथ की कार्यकारिणी का सदस्य रहा हूँ। बीच में जमाअत में एक टर्म का जोइंट सेक्रेट्री भी रहा।

बोहरा तहरीक के उद्देश्यों को लेकर कई बार चर्चा होती रही मगर जवाबदेही और अपनी बात रखने की अज़ादी के अलावा अक्सरो बेशतर हमारे लोग बड़े confused रहते है।

जहां तक अगली पंक्ति को तहरीक की बागडोर सौंपने का सवाल है मैंने यह महसूस किया है कि हमारी तहरीक में नौजवानों की काबिलियत को मुनासिब तरीक़े से नहीं आंका गया है। मैं समझता हूँ कि सैयदना साहब के सन् 1996–98 के उदयपुर दौरे के दौरान उदयपुर की जमाअत/बोहरा यूथ तहरीक को डॉ0 अब्बास अलवी जैसे (उस जमाने के नौजवान) शख़्स ने मरहूम हैदरी साहब की रहनुमाई में भारी दबावों और अफवाहों के बीच बहुत होशियारी और अकलमंदी से संभाला और आगे बढ़ाया और ज़बरदस्त दबावों के बावजूद हिम्मत और धैर्य का परिचय दिया।

जनाब आबिद अदीब जब अपनी लीडरशीप की रूहदाद बताते हुए सैफ इमदादिया की activities की बातें करते हैं और उस ज़माने में उदयपुर तशरीफ लाये कोठारियों (आमिलों, शेखों, भाई साहबों) से डेलानों में हुज्जत और विरोध की बातें बताते हैं तो रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

यह वो जमाना था जब मेरे ख़्याल से क़ौम में इस्लाह और रोशन ख़्यालात की कोई सोच भी नहीं सकता होगा। मगर एक नौजवान (हो सकता है और भी हों) आबिद अदीब जिनकी उम्र उस ज़माने में मेरी 40 बरस की उम्र से भी कम रही होगी, ने कोठारियों से पंगा लिया। जबकि आज के हमारे नौजवानों के बीच न तो वो ज़माना हैं, न उस ज़माने जैसे कोठारी और न ही डेलानों जैसी सल्तनत–जहाँ जाने और अपनी बात कहने और रखने की हर कोई हिम्मत या हिमाक़त नहीं कर सकता। तो फिर तहरीक की तंज़ीमों की बागडौर आज के नौजवानों के हाथों में देने से क्यों परहेज़ किया जा रहा है।

कई लोग और नौजवान यह सोच कर आगे नहीं आते हैं कि अभी जमाअत और तहरीक को चलाने वाले हैं। वक़्त की ज़रूरत है कि हमारे वर्तमान लीडरान हमारी तन्ज़ीमों के आइन्दा के चुनाव में खड़े नहीं होकर तहरीक की बागडोर नौजवानों के हाथों में सौंप दें और तजुर्बेकार बुजुर्ग की हैसियत से उनका वक्तन–फवक्तन मार्गदर्शन करें और उनकी हौंसला अफज़ाई करें। यह मान कर कि वक्त, कठिनाईयां और चुनौतियां नौजवानों को सब सिखा देगी।

मगर हाँ, नौजवानों को, तहरीक को आगे बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित करने से पहले उन्हें यह भली–भांति बताया जाना बहुत ही ज़रूरी है कि हम क्या हैं, क्यों हैं, हमारी आज़ादी क्या है, जिम्मेदारियां क्या हैं और हमारी तहरीक के विस्तृत अग्राज़ो मकासिद क्या हैं?

मैं समझता हुँ कि हमें इस्माइली अकायद और रिवायत के पाबंद रहते हुए अपने समाज में इस्लाह के लिये दीगर मजहबों मिल्लत के अकायद और रिवायतों को समझना चाहीये किसी भी इबादतगाह और बज़्म में जाने से परहेज नही करना चाहीये और उसके मुताबिक अपने समाज में बदलाव के मुद्दे पर कोई राय कायम करनी चाहीये जो हमारी इस्लाही तहरीक को बहुत बल प्रदान करेगी।

तहरीक को आगे बढ़ाने के लिए नौजवानों को किस तरह प्रोत्साहित किया जाये– इस पर सोचने और उन्हें इसके लिये प्रोत्साहित करने से पहले उपर लिखी बातो पर गौरो–फिक्र और बहस का होना बहुत लाज़्मी है। इसमें ऑल वर्ल्ड बोहरा जर्नल की भूमिका मुफीद साबित होगी।

कुरआन, अहादीस और नहजुल बलाग़ह

I कुरान पाकः

इस लेख के साथ हम मर्हूम शेख़ अहमद अली राज (रे. अ.) की इस्माईली तफसीर को एक सीरीज़ की शक्ल में हिन्दी रसमुल–खत (लिपि) में पेश करेंगे। इन्शा अल्लाहो तआला।

सुरः अल फातिहाः यह तरतीब में पहली और नुज़ुल के लिहाज़ से सुरः है। यह मक्का में नाज़िल हुई और इसमें सात आयात हैं, जिसमें बिस्मिल्लाह भी शामिल है।

तर्जुमा आयात 1—7

शुरूअ करता हूँ मैं अल्लाह के नाम से जो बहुत महरबान है रहमत वाला है। तमाम तारीफ़े (वखान) अल्लाह ही के लिये हैं जो तमाम जहाँनों (आलमों– युनिवर्सेस) का परवर दिगार (लार्ड) है। बहुत महरबान रहमत वाला है। जज़ा के दिन का (क़यामत) का मालिक है।

(ए अल्लाह) हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद (सहायता) तलब करतें हैं। हमें सीधे रास्ते पर चला, उन लोगों का रास्ता जिस पर तुने नेअमतें अता की (और) इन लोगों पर गुस्सा नहीं किया और न ही वोह गुमराह थे।

हदीसः इसके साथ हम मर्हूम शेख़ अहमद अली राज (रे.अ.) की किताब मजमउल बहरेन हिस्सा अव्वल (पार्ट–1) में तहरीर शुदा अहादिस सीरीज़ में पेश करेंगे इन्शा अल्लाह। हर किस्त में चार–पाँच अहादीस तरतीब से पेश की जायगी।

1. आअमाल (कर्मो) का आधार निय्यतों (इंटेनशन) पर है।
2. बैठकों (मीटींग्स) में जो बातें होती है उनको अमानत समझों ।
3. मशवरों (राय) देने वाले को अमीन समझना चाहिये।
4. वाअदा एक किस्म का अतिया (भेंट) और एक किस्म का देन (क़र्ज) है।
5. जंग (लड़ाई) में दाओ–पेच जायज़ हैं।

II अहादीस

1. सख़ावत लाभ वाली आदत है।
2. तंगी करना (कंजूसी) बद बख़ती है और सहलाई (सख़ावत) बरकत है।
3. देन (कर्ज़) एब है।
4. तदबीर आधी एश है।

(माखूज : मजमउल बहरेन हिस्सा –1 शेख़ अहमद अली (रे.अ.))

III नहजुल बलाग़ह

(तहता कलामिल ख़ालिक व फौक़ा कलामिल मख़लूक – ईश्वर वाणी (कुरान) से नीची और मनुष्य वाणी से उच्च स्थान वाली पुस्तक है नहजुल बलाग़ह)

खुतबा :अपनी नीयत के एख़लास (पूर्णता) और मजलूम (जिस पर अत्याचार होता है) की हिमायत (तरफदारी) में बोलना चाहा तो फरमाया :

तुम ने मेरी बैअत अचानक (अकस्मात्) और बे सोचे समझे नहीं की थी, और न मेरा और तुम्हारा मुआमला यकसां (समान) है। मैं तुम्हें अल्लाह के लिये चाहता हूं और तुम मुझे अपने शख़्सी फ़वायद (व्यक्तिगत लाभों) के लिये चाहते हो। ऐ लोगों! अपने इन्सानी ख़्वाहिशात (आत्मा की इच्छाओं) के मुक़ाबिले में मेरी इनायत (सहायता) करो। खुदा की क़सम! मैं मज़लूम का उस के ज़ालिम से बदला लूंगा और ज़ालिम की नाक में नकेल डाल कर उसे सर चश्मए हक़ (सत्य के मुख्य स्रोत) तक खींच कर ले जाऊंगा चाहे उसे यह नागवार क्यों न गुज़रे।

माखुजः नहजुल बलाग़ह प्रकाशक तब्लीगे इमानी मुम्बई संस्करण 1996

— **मंसूर अली बोहरा**

सोमवार (Monday)

सोमवार हफ्ते का तीसरा दिन है। इस दिन की एहमीयत बहुत है।

इसकी एहमियत को बताते हुए हज़रत रसूलेख़ुदा (स.अ.) ने एक दिन अपने असहाबों से फरमाया था कि सोम के दिन की फज़ीलत बहुत है। तुम लोग सोमवार के दिन रोज़ा रक्खों ओर खुदा के ज़िक्र और इबादत में पूरा करना क्योंकि ये दिन वह दिन है जिस दिन मैं पैदा हुआ। ये दिन वह दिन है कि जिस दिन में नबुव्वत और रिसालत का आफताब ज़ाहिर हुआ। सोम के दिन नबूव्वत से ख़ास हुआ। सोम के दिन रिसालत के रूत्बे से मैं मनसूस हुआ। सोम के दिन मेरे ऊपर सबसे पहले वही नाज़िल हुई। सोम के दिन सुरतुल्माएदा का नैअ़मत मुझे हासिल हुई।

ए लोगों सोम के दिन ही तुम्हारे नबी मदीने में दाख़िल हुए। सोम के दिन ही खुदा ताअ़ला ने बदर की लड़ाई में मुझे फतह दिलाई। सोम के दिन ही खुदा ताअ़ला ये हजरअसवाद को उसके मुक़ाम पर रफेअ़ (fit) किया। सोम के दिन तमाम आ़माल खुदा जल्लेशानुहू की तरफ चढ़ते हैं और सोम के दिन ही खुदा वन्द करीम अपने तमाम बन्दों के आअ़माल नामा पढ़ते हैं। सोम के दिन ही खुदा वन्द करीम तमाम अशझारों (दरख्तों) को पैदा किया और ख़ास सोमवार को ही हमारे नबी–ए–करीम ने जाम–ए–शहादत नोश फरमाया। (शहादत इस माने में कि आपके खाने में एक यहुदन ने ज़हर मिलाया था जिसका धीरे–धीरे असर हुआ था)

- फख़रूद्दीन आर.वी.

बोहरा यूथ कार्यकाल समीक्षा

9, फरवरी, बोहरा यूथ कार्यकाल समीक्षा पर आयोजित बैठक में सत्र की विसंगतीयों व उपलब्धीयों पर प्रकाश डाला गया। समीक्षा में 25 प्रतिभागीयों व कार्यकारी सदस्यों ने हिस्सा लिया।

सत्र के दौरान उपलब्धीयों और विसंगतीयों पर चर्चा के दौरान पाया कि नकारात्मक कार्यों में सदा से हमारी नीति सुरक्षात्मक रही है। लिहाज़ा शबाब के नरम रवैये के चलते इस दीर्घ अवधि में काफी रचनात्मक कार्य हुए विशेष कर खांजीपीर केम्पस को अवांच्छनीय तत्वों के चगुंल से मुक्त करवा कर जर्झर हो रही बिल्डिंग की तामीर करवाना वहां स्कूल व अकादमी कायम करना। इसी दौरान 16, मार्च 1975 में हुए समूह निकाह की सिल्वर जुबली का जश्न भी खांजीपीर ही में मनाया गया। जिसमें उदयपुर से सभी सम्प्रदायों के प्रतिनिधीयों ने भाग लिया।

वर्तमान में स्कूल सीनियर सेकेण्डरी स्तर तक क्रमोन्नत होने की तैयारी कर रहा है। व अकादमी अंतराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ीयों को प्रशिक्षण देने की क्षमता रखती है। इन दोनों संस्थाओं को खोलना उन्हें सुचारू रूप से आगे बढ़ाना बोहरा यूथ की बड़ी उपलब्धियों में सम्मिलित है।

रचनात्मक गतिविधीयों के चलते बोहरा यूथ को रजिस्टर्ड करवाया गया जिसमें सबसे अहम संसोधन यह रहा कि बोहरा ख्वातीन की भी समान्तर की भगीदारी रहेगी।

सत्र समाप्ति पर श्री नासिर जावेद के सयोंजन में चुनाव सम्पन्न करवाये गये जिसे प्रतिभागीयों के अभाव में आगे बढ़ाये गये। इस बात पर खेद प्रकट किया गया कि प्रतिभागीयों के अभाव में चुनाव न होने का कोप भी वर्तमान कार्यकारिणी को सहन करना पड़ रहा है।

वर्तमान में शबाब गुट के प्रतिक्रियावादी रवैये की वजह से रचनात्मक कार्यो पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। जिस पर अफसोस व्यक्त किया गया।

समाज की जरूरत को देखते हुए हाल ही में बोहरा यूथ ने ''सेंटर फॉर सीनियर सीटीजन'' कायम किया। जिसके कार्य प्रणाली पर समीक्षा करते हुए बुर्जुगों की भागीदारी व उसकी गतिविधियों को बढ़ाने के लिये विशेष सेल कायम किया गया।

अंत में बोहरा यूथ के चुनाव जमाअत के साथ माह अप्रेल में करवाने का प्रस्ताव पारित कर जनाब याकूब अली जहीर को चुनाव सयोंजक नियुक्त किया गया। व सदस्यों से विनती की गयी कि बोहरा यूथ में जन भागीदारी को बढ़ाने के लिये सभी मिल जुल कर प्रयास करें।

कार्यशाला की समाप्ति पर बोहरा तहरीक के सरगर्म रूकन जनाब जुल्फिकार भाई ओरंगाबाद वाले व दीगर बुजुर्गों की याद में शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

लियाकत अमर
सेक्रेट्री, बोहरा यूथ

उर्स सैय्यदी फखरूद्दीन शहीद पर विशेष
''गलियाकोट से गलियाकोट तक''

गलियाकोट, राष्ट्रीय धार्मिक एवं भावात्मक एकता का प्रतीक है जहां हिन्दू, जैन और बोहरा तीन धर्म सम्प्रदाय के तीर्थों का संगम है। गलियाकोट के प्रसिद्ध तीर्थ शीतला देवी का मंदिर एवं विश्वप्रसिद्ध दाऊदी बोहरा समुदाय का तीर्थ दरगाह, दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के बने गगनचुम्बी जैन देवालय, इस कस्बे की समृद्धि की गौरवगाथा कह रहे हैं।

लगभग नो सौ (900) वर्ष पूर्व का किस्सा है — तारमल और भारमल दोनों भाई इमामुल मुस्तनसिर के सम्प्रदाय में शामिल हो गये थे। भारमल के पुत्र याकूब थे, जिनको गुजरात में धर्म प्रचार व प्रसार का कार्य दिया गया और तारमल के पुत्र फखरूद्दीन थे, जिनको बागड़ प्रान्त (राजस्थान) के लिए भेजा गया। बाल्यावस्था से ही फखरूद्दीन में किसी महान सन्त जैसे लक्षण नजर आने लगे थे। वे एकान्त में रहकर मनन–चिन्तन किया करते थे। इस प्रकार यह मेघावी बालक फखरूद्दीन धर्मसेवा का प्रेरणा स्त्रोत बन गये। गरीबों की खिदमत करना, भूखों को खाना देना, रोगियों को दवा देना, उनका रोजमर्रा का काम था।

बाद में उनको धर्म की पूरी तालीम दी गई। छोटी अवस्था में ही वे वली बन गये। जब वे धर्म का मसीहा बनकर वागड़ प्रान्त के सागवाड़ा नामक कस्बे में आ रहे थे तब दस्युओं ने उन पर हमला कर दिया। लड़ते लड़ते उनके सारे साथी मारे गए, सिर्फ वे ही बच गये थे। इसी समय बचाव के कुछ क्षण बीतें — मगरिब नमाज का समय हो चुका था अल्लाह की याद में वली ध्यान मग्न थे तब पीछे से दस्युओं ने फिर उन पर हमला कर दिया। उसी दिन वह महान आत्मा संसार से विदा हो गयी। उस समय उनकी युवावस्था ही थी। उन्हें उसी जगह दफनाया गया और उन पर मज़ार बनवाया गया। लोगों की इबादत से लोगों की मुरादें पूरी होने लगी तथा शहीद की प्रसिद्धि सब जगह फैल गई, धर्मप्रेमी समुदाय फखरूद्दीन की दरगाह में आने लगा।

गलियाकोट दरगाह की शुरूआत की ईटों का जमाव आज से लगभग 900 वर्ष पूर्व हुआ था। सन् 1825 में गलियाकोट मज़ार पर पहला गुम्बद सैयदना तैयब जैनुद्दीन साहब के समय में बना और मस्जिद फखरी नाम से बनी। इसका पूर्व नाम वाबे फखरी था, पर सैयदना ताहेर सैफूद्दीन साहब ने बदलकर अपने नाम से ताहेरआबाद रख दिया। दरगाह और शीतलादेवी मंदिर की पूरी जगह यहां के महाराणा रावल साहब ने दी थी। जिसके नाम की तख्ती भी निकाल ली गई।

सन् 1973 में बोहरा समुदाय के लोगों और स्त्रियों पर हमले किये गये। अभी हाल ही में बोहरा यूथ के काफिले को जियारत से रोक दिया गया और इस तरह सैयदना बुरहानुद्दीन साहब ने न सिर्फ अपने बल्कि फखरूद्दीन शहीद के कार्यो को भी नाकाम करने की कोशिश की है, जिसे तारीख कभी माफ नहीं करेगी।

- हुसैन उदयपुरी

HOMOEO HEALTH CARE (होम्योपैथिक क्लीनिक)
Superspeciality Homeopathic Treatment
Dr. Raj Kumari Jain
B.H.M.S.
Regi. No. : 14376
Time : 4 to 7 P.M.
Cont. No. - 9460928082
E-mail : dr_hhc@yahoo.co.in
Superspeciality in :-
✦ Allergy - एलर्जी
✦ Asthma - अस्थमा
✦ Acidity - एसिडिटी
✦ Children disease - बच्चों के रोग
✦ Diabetes - शुगर
✦ Female Disease - स्त्री रोग
✦ Hair Fall - बाल गिरना
✦ Headache - सिर दर्द
✦ Joint Problem - गाठिया रोग
✦ Psoriasis - सोरायसिस
✦ Pimple - पिम्पल
✦ Skin disease - चमड़ी रोग
✦ Sinusitis - साइनस
✦ Weakness - अशक्ति
पता : बोहरा जमात खाना के पास, भूतमहल रोड़, बोहरावाड़ी, उदयपुर
Ex. Doctor of Dr. Batra's Positive Health Clinic (Baroda)
Lecturer in Homeopathic Medical College (Dabok) Udaipur
A Treatment without side effect, Painless treatment only require Regularity, Faith & Patience.

Sanwa Enterprises
Loha Bazar, Chamanpura, Udaipur (Raj.)
Deals in :
Modular Kitchen, Chimni, Hardware & Machine

We celebrate womanhood at every turn and corner of our life. But it is not very often that we acknowledge the role of Islam in the strength displayed by Muslim women when dealing with all and sundry. Islam is a religion that empowers women to live a life of dignity and this is evident in our reformist women who have dared all in their march to freedom. Here are some examples of global valor, courtesy Muslim Women's Newsletter.

Muslim women come out in large numbers to vote

Long queues of burqa-clad women with babies on their shoulders waited for hours to cast the vote in Muslim-dominated areas across Jaipur during the recent Assembly elections in the state. Since early morning, Muslims came out in large numbers to cast their vote in constituencies where they have a sizeable population.

Muslim women, even from orthodox families, shunned their hesitation and came out in large numbers to cast their vote. "This is the only way we can express our feelings," said Sakeena Ali, a voter of Hawa Mahal constituency.

Honour for Shabnam Hashmi and Inderjit Kaur

Noted activists Shabnam Hashmi (right) and Dr Inderjit Kaur were presented the National Minority Rights Award for 2008. The award by National Commission for Minorities was given for outstanding contribution in safeguarding and promoting the constitutional and legal rights of the minorities of India. Dr Kaur is a Padma Bhushan awardee and has been chosen for this award for her work for communal harmony.

Shabnam Hashmi is founder of ANHAD (Act Now for Harmony and Democracy) and has done a lot of work for the victims of communal violence especially after the Gujarat riots of 2002.

Saudi scientist works to empower women

Hayat Sindi is a woman on a self-described mission: "to change how science and women are viewed in the Middle East."

Born and raised in Saudi Arabia, Sindi studied biotechnology at Cambridge University in the United Kingdom before coming to the United States to learn how to commercialize scientific discoveries.

Her determination to succeed despite sexism has paid off. Sindi helped found a company, Diagnostics for All (DFA) that is developing inexpensive, disposable medical tests for use in the developing world. DFA won two prestigious business awards and hopes to have prototypes tested in the field by 2010.

In a bold move, Sindi and her colleagues spurned potentially lucrative royalty payments and made DFA a nonprofit company, underscoring Sindi's determination to help those less fortunate as quickly as possible.

Syndic, a devout Muslim who wears a hijab (head covering), was a visiting scientist in George Whitesides' laboratory at Harvard University when she took a Harvard Business School course, "Inventing Breakthroughs and Commercializing Science."

Her message to women in Saudi Arabia and in any country challenged by sexism is "be persistent" and "never take 'no' for an answer." "Men and women are equal," Sindi said, but even in the United States and in Europe this is not fully appreciated. While studying at Cambridge she encountered a professor who told her that women cannot be successful in the field of biotechnology.

Now that she has proved her critics wrong, she leads by example and frequently lectures in the Middle East, hoping to inspire women.

Wearing her hijab, she frequently is mistaken for a tourist when she attends a scientific conference. In her lectures, she rails against being given this "life sentence," a superficial judgment based on her appearance, which she characterized as: female, scarf, can't do science, can't get funding.

Sindi confessed that sexism can make leading by example frustrating, especially in many countries in the Middle East. But she is grateful for the opportunities she has had and insists that women should follow their dreams, despite the obstacles.

"Wherever you need to go to pursue your dream, go."

Kerala Muslim Marriage Bill: proposals

In a progressive and bold step towards the reform of Muslim Personal Law, the Kerala Law Reforms Commission has drafted a bill which will curb and check the practices of polygamy and divorce through Talaq among Muslims in the state.

The bill titled as the Kerala Muslim Marriage and Dissolution by Talaq (Regulation) Bill seeks to "declare that, among the Muslims in Kerala, monogamy is the general rule and polygamy a just exception, permissible only in socially exceptional circumstances and that also subject to compassionate conditions, and to provide further that divorce by talaq can be effected only subject to special conditions."

The bill which has been drafted by the Commission led by the noted jurist and former Supreme Court lawyer Justice VR Krishna Iyer also declares that "if any married Muslim, man or woman, marries again during the subsistence of the first marriage, the party who violates shall be guilty of bigamy under the Indian Penal Code and punishable as such."

As per the Bill 'marrying again during the lifetime of husband or wife is an offence.'

The Bill has been drafted by the commission after the observation of the Kerala High court on the issue of polygamy and divorce among Muslims.

- Md. Ali, TwoCircles.net

Training programme for Muslim women

The Institute of Islamic Studies, Mumbai, has organised a training course in 'Rights of Muslim Women - Theory and Practice' for those who are actively involved in promoting and working for the awareness of Muslim women's right in their respective areas. This training will equip them with adequate knowledge and skills to do their work more effectively and efficiently. Needless to say such training is highly necessary for those working in this field.

A list of subject mentioned below clearly shows how useful this training could be.

- Islam and its origin and development.
- Position of Women before Islam.
- Evolution of Islamic Shariah.
- Concept of Women in Quran.
- Position of Women in Shariah.
- The Personal Law in India.
- Personal Law reforms in Islamic countries.
- Personal Law reforms and codification of law in India.

These subjects will help them to thoroughly grasped how the Shariah was evolved, what steps can be taken for reforms and what are the possibilities of empowerment and liberation of Muslim women. In all there will be 30 participants from all over India. The training will be from February 2 to 4.

Muslim woman arrested for not taking off headscarf

A woman was arrested for contempt of court in west Georgia, USA, after she refused to take off her hijab, the headscarf worn by Muslim women.

Chris Womack with the Douglasville Police Department says 40-year-old Lisa Valentine, who goes by her Islamic name Miedah, was ordered jailed for 10 days by Municipal Court Judge Keith Rollins. She violated a court policy that prohibits people from wearing anything on their head.

Valentine's husband, Omar Hall, said she was released from jail Tuesday evening. He called the judge's actions unconstitutional and humiliating.

Last year, a Muslim woman in Valdosta made headlines when she was ordered to remove her hijab in Municipal Court. Officials cited homeland security reasons for forcing her to do so.

THE UDAIPUR URBAN CO-OP. BANK LTD.

Call upon for : Personal Loans * Home Loans * Vehicle Loans* Business Loans
We promise competitive interest rates and speedy disposal.

Pannadhay Marg Branch Ph: 0294 2422461 M: 9928790762	Dhan Mandi Branch Ph: 0294 2422355 M: 9828162044	Bada Bazar Branch Ph: 0294 2420429 M: 9414738065

Fatehpura Branch Ph: 0294 2450762 M: 9828195535	Madhuvan Branch Ph: 02942423542 M: 9460402651	Hiran Magri Branch Ph: 0294 2460893 M: 9414786877	Krsihi Mandi Branch M: 946030453

Rajsamand Branch Ph: 95 2952 224022 M: 9460415822	Salumber Branch Ph: 95 2906 231250 M: 979903464	Fateh Nagar Branch Ph: 95 2955 220316 M: 9929996972

साम्प्रदायिक दंगे 2008 भाग-1

– डॉ. असगर अली इंजीनियर

जब सन् 2008 शुरू हुआ उस समय ऐसा लग रहा था कि स्वतंत्रता के साठ वर्षों में यह वर्ष पहला दंगा –मुक्त वर्ष रहेगा। जल्दी ही यह आशा टूट गई और हर वर्ष की तरह, देश में साम्प्रदायिक हिंसा और दंगे शुरू हो गए। वर्ष के शुरू में कोई बड़ा दंगा नहीं हुआ। परंतु सन् 2008 का अंत आते– आते यह आशा भी खत्म हो गई कि इस साल देश में कोई बड़ा साम्प्रदायिक दंगा नहीं होगा। हमेशा की तरह चन्द अपवादों को छोड़कर, पुलिस का व्यवहार घोर पक्षपातपूर्ण रहा और अल्पसंख्यक पुलिस के पूर्वाग्रहपूर्ण व्यवहार के शिकार बने।

सन् 2008 की एक विशेषता यह थी कि इस साल देश में पहली बार ईसाइयों के विरूद्ध साम्प्रदायिक हिंसा हुई। यद्यपि ईसाइयों पर हमलें कई वर्षों से जारी हैं, परंतु सन् 2008 इतिहास में एक ऐसे वर्ष के रूप में दर्ज किया जाएगा, जिसमें पहली बार ईसाई अल्पसंख्यकों के विरूद्व बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक हिंसा हुई। इस हिंसा का केन्द्र था उड़ीसा का कंधमाल जिला। संघ परिवार कभी ईसाइयों से उतना नाराज नहीं था जितना इस वर्ष था। ईसाई, जिन्होंने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत में अभूतपूर्व सेवा प्रदान की हैं, संघ परिवार के निशाने पर रहे।

पहला ईसाई विरोधी दंगा कंधमाल जिले में सन् 2008 के पहले दिन हुआ। एक जनवरी को जिले के चार गांवों में ईसाइयों के घरों में आग लगा दी गई। लगभग दस घर जल कर राख हो गए और ईसाइयों ने भाग कर दूसरे गांव या जंगल में शरण ली।

यहां पर यह बताना प्रासंगिक होगा कि भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति व्ही. एन. खरे ने 19 जनवरी को साम्प्रदायिक दंगों से मुकाबला करने के लिए एक स्वतंत्र संस्था की स्थापना की मांग की। उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों को सुरक्षा प्रदान करना सरकार का राजधर्म है और दंगों को केवल कानून और व्यवस्था की समस्या नहीं माना जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि दंगे, सामान्य कानूनों के उल्लघंन से कहीं अधिक गंभीर अपराध हैं और उनसे निपटने के लिए विशेष कानून बनाया जाना चाहिए। ''अगर अल्पसंख्यकों को प्रताड़ित किया जाता है और उन्हें प्रताड़ित करने वालों को कोई सजा नहीं मिलती तो हमारे संविधान में सभी नागरिकों को दिए गए जीवन के अधिकार का क्या अर्थ रह जाता हैं'', उन्होंने कहा।

इस तरह की समझदारी और परिपक्वता की बातें सुनने और उन्हें मानने वाला हमारे देश में कौन हैं ? साल दर साल अल्पसंख्यकों पर हमले होते जाते हैं और साल दर साल हमलावर खुलेआम घूमते नजर आते हैं। यूपीए सरकार ने यह वायदा किया था कि वह साम्प्रदायिक दंगों को रोकने के लिए एक अलग कानून बनाएगी परन्तु उस वायदे को उसने पूरा नहीं किया। साम्प्रदायिक दंगे विधेयक किसी सरकारी दफ्तर की पुरानी अलमारी में धूल खा रहा हैं। अब तो चुनाव के पहले संसद का सत्र होने की संभावना भी बहुत कम बची है और यह विधेयक अगली सरकार बनने तक कानून नहीं बन सकेगा।यह तो है एक तथाकथित धर्मनिरपेक्ष सरकार के हाल। स्पष्टतः साम्प्रदायिक दंगों को रोकना यूपीए सरकार की प्राथमिकताओं में नहीं है।

हमारे देश में धार्मिक त्यौहार, विशेषकर होली, साम्प्रदायिक दंगे भड़काने वालों के पसंदीदा मौके रहे हैं। राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और टोंक में 23 मार्च को भड़की साम्प्रदायिक हिंसा में कई लोग घायल हुए और बारह दुकानें और गाड़िया आग के हवाले कर दी गई। पुलिस ने करीब तीस लोगों को गिरफ्तार किया। होली के दिन झारखंड के जमशेदपुर में भी साम्प्रदायिक हिंसा हुई जिसमें एक व्यक्ति घायल हुआ। हिंसा की शुरूआत एक समुदाय की महिला को दूसरे समुदाय के युवक द्वारा छेड़े जाने से हुई।

मराठवाड़ा के जालना में चार अप्रैल को उस समय हिंसा शुरू हुई जब दोपहर की नमाज़ के वक्त एक मस्जिद के बाहर कुछ हिन्दुत्ववादियों ने अयोध्या में राममंदिर बनाने के संकल्प वाले गीत गाने शुरू कर दिए। एक पुलिस इंस्पेक्टर सहित आठ लोग घायल हुए जिनमें से तीन को गंभीर चोटें आई। रात में कुछ मध्यस्थों के प्रयासों से शांति स्थापित हो गई परंतु देर रात बजरंग दल के पहलवानों ने एक मुस्लिम मोहल्लें पर हल्ला बोल दिया और स्थिति फिर बिगड़ गई। जालना के बाद जलगांव में भी साम्प्रदायिक हिंसा हुई जिसमें चार लोग घायल हुए और इक्कीस को गिरफ्तार किया गया।

गुजरात में बड़ौदा एक ऐसा शहर है जहां नियम से हर साल साम्प्रदायिक दंगे होते हैं। इसी परंपरा के तहत, इस साल भी दस अप्रैल को बड़ौदा में साम्प्रदायिक हिंसा हुई जिसमें पांच लोग घायल हुए, चार कारों को आग लगा दी गई और पच्चीस दंगाइयों को पुलिस ने हिरासत में लिया।

केरल हमेशा से साम्प्रदायिक हिंसा की दृष्टि से शांत प्रदेश रहा है। वहां शायद ही कभी साम्प्रदायिक दंगे होते हैं। अप्रैल के मध्य में कर्नाटक से लगे हुए केरल के कसरागोड़ जिले में साम्प्रदायिक झड़प के बाद चार हत्याएं हुई। बीजेपी के कुछ समर्थक अपनी कार से उतरकर मस्जिद के पास खड़े होकर लधुशंका से निवृत होने लगे। कुछ लोगों ने इस पर आपत्ति की और जल्दी ही भीड़ इकट्ठी हो गई और हिंसा शुरू हो गई। हत्याओं के बाद इलाके के लोगों ने विरोध स्वरूप अपनी दुकानें बंद रखी।

- Centre for Study of Society and
Secularism Mumbai
E-mail: csss@mtnl.net.in

To be continued....

दिली मुबारकबाद

हमारी प्रिय ***श्रीमती आरिफा गुमानी*** (मुम्बई) के चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट बनने पर दिली मुबारकबाद।

मिनजानिब : तौक़ीर हुसैन गुमानी (पति), सकीना, अली असगर (पुत्री-पुत्र), हाजी तैयब हुसैन-हजानी बतुल बाई (ससुर-सास), सरफराज-खेरूनिसा (जेठ-जेठानी), हुसैन-आमीर (भतीजे), आफताब-शबनम (देवर-देवरानी), बतुल-कमरूदीन सायरावाला (माता-पिता), आरिफ हुसैन-नसरीन (भाई-भाभी), नासेह आमीन (भतीजा)

फर्म : **MICRO SOLVE COMPUTER,** MUMBAI

Religious bureaucracy

Recently, in one month newspapers in Mumbai reported at least two instances where Dawoodi Bohra families were threatened with social boycott by the comunity's powerful religious bureaucracy.

Mumbai Mirror carried a report about a business family that was denied entry into the sect's mosque in Mazgaon because they refused to obey a rule introduced by religious officials that made mourning or maatam (in memory of the martyrdom of Imam Hussain, grandson of Prophet Mohammed) compulsory after every namaaz.

Saifuddin Insaf, who edits the Bohra Chronicle published by the Bohra Youth Association, Mumbai, said that over the decades, in many community mosques, members of the clergy have imposed several new religious rules on the faithful. Those who disobey are threatened with ex-communication, an issue that is being examined by the Supreme Court through a long- pending public interest litigation.

While the headquarters of the sect in Mumbai has said that incidents like the one in Mazgaon could be the fallout of local disputes, there have been several incidents in the last few months where members of the community have openly protested against the clergy.

In August, when the sect observed the Ramzan fast, an Amil, a senior religious official of a mosque near Raudat Tahera, the community's holiest shrine in the city, was beaten up by women for demanding rent for space to pray in the mosque.

The official had apparently sold musallahs or prayer mats in the women's section at the rate of Rs 552 per mat, before Ramzan. When managers of the mosque restricted entry only to those who had rented prayer space, there was resentment from those who were turned away. When a woman carrying a child was barred from entering the mosque, there was a scuffle and police had to be brought in to stop the crowd from beating up the Amil.

In September, a newspaper in South India reported that Bohra women and men in Chennai damaged vehicles belonging to mosque officials when women who did not pay a monthly rent of Rs 1,500 for prayer space were denied food for breaking their day-long fast.

Despite opposition to new religious rules introduced by the clergy from a few members of the community, most Bohras accept the regulations as their religious duty.

"I do not agree that all mosque officials impose new religious rules. There is no pressure on community members to follow these rules," said Mumbai-based businessman Saifuddin Kopty. "The mourning ritual, for instance, has been accepted by most Bohras. I observe maatam, whether I am praying at home or at the mosque. It is our way of acknowledging the sacrifice of Imam Hussain."

Courtesy: Mumbai Mirror

बोहरा यूथ मेडीकल रिलीफ सोसायटी उदयपुर (राज.)

Phone No. 2424886

DR. ISHAQ HUSSAIN SHAH (M.B.B.S. M.S.)
वरिष्ठ सर्जन (जनरल सर्जरी इन्चार्ज)
रोज़ सुबह 9.00 से 12.30 बजे एवं शाम 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. REHANA BANU - (M.B.B.S., M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ; GYNAE & OBST.)
रोज़ सुबह 8.30 से 12.00 बजे तक

DR. KULSUM SHAH (M.B.B.S. M.S.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ; GYNAE & OBST.)
रोज़ शाम को 5.00 से 7.00 बजे तक

DR. FATIMA SIRAJ (M.B.B.S., D.G.O.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ; GYNAE & OBST.)
रोज़ दोपहर 12.00 से 1.00 बजे तक

DR. SURENDRA NATH SHARMA (M.B.B.S. D.H.C.)
शिशु एवं बाल रोग विशेषज्ञ (PAED)
रोज़ शाम को 5.00 से 7.00 बजे तक

हमारे यहाँ पर सोनोग्राफ़ी, खून व पैशाब की जाँच और दूसरी सभी तरह की जाँचे न्यूनतम लागत में की जाती हैं। प्राथमिक उपचार हेतु दवाइयाँ मुफ़्त प्रदान की जाती हैं एवं खतना की सुविधा उपलब्ध है।

Muharram observed by Bohra Youth around the globe :

Clockwise from top : Muharram observed in Toronto, Dubai and Kuwait.

Muharram in Danbury, USA

December 27th 2008 ushered in the New Year as per the Hijri Calendar. With it came the most sanctified month in the Muslim calendar, the month of Muharram. As in previous years, December 29th 2008 marked the beginning of the 10-day mourning period.

In North America, in the city of Danbury, C.T, Muharram was observed with great enthusiasm by the Reformist Dawoodi Bohras under the banner of BYANA(Bohra Youth Association of North America). The venue was the recently-bought Bohra Youth Center. The local Bohra community along with their Shia friends jointly organized this event to honor the memory of the great Martyr of Islam.

Mourners from far flung areas of New York, New Jersey, and Hartford attended the Majlisses. Sister Zakira Azra Batool was invited to address the congregation. An erudite and a powerful orator, she enlightened the sizeable gathering with an insight into the tragedy of Karbala, its reasons and consequences. In her daily sermons (vaez), she shed light on the history of Karbala by emphasizing on the events, by contemplating on the great virtues of the Martyr and by translating those great moral and spiritual lessons into our own lives. Her discourses in Urdu enhanced the mourners' knowledge on the great historic event in which were exemplified such soul-stirring virtues of unshaken faith, undaunted courage, willing self-sacrifice, steadfastness in the right and unflinching war against the wrong.

A guest speaker, Md Ayub, a professor of the Hartford Seminary was also invited to render three lectures in English during weekends. It was a satisfying experience for the congregation to receive such scholarly enlightenment .

Shahedane-Karbala Niyaz was also served daily sponsored by generous momineens.

On Roz-E- Ashura, mourners, both male and female congregated since morning reciting Marsiyas and took part in the ceremonial Matam-E-Husayn as a display of their devotion to the slain Martyr. Shaam-e-Ghariba was observed after Maghreb with great piety and solemnity. Sister Zakira Azra Batool dexterously recreated the grief-stricken and blood-smeared epic of Karbala with her powerful oration. The proceedings ended with the traditional dish of Haleem and roti being served.

The event was possible due to the untiring efforts of the BYANA President Asrar Ahmed, the newly-appointed treasurer Hamida Haidary , committee members Sabiha Ali and Saeeda Quaisar. Of course there were scores of volunteers who too pitched in. The event was celebrated in the true spirit of Islam, thus strengthening the bonds of brotherly love which unite all who hold sacred the ideals of brotherhood preached by the holy Prophet of Islam.

- Reyaz Sanwarwalla, Jt Sec, BYANA

Moharram in Kuwait

Sermons were held by the Bohra Youth members during Muharram in Kuwait. In the evening Majlis was conducted where Taqreer and Noha were presented to remember how Imam Hussain and his companions sacrificed their life for the sake of Islam. On the day of Ashoora, Alam and Matami juloos were organised with the day ending with the Majils-e-Shaam-e-Gariba. Niyaz-e-Imam Hussain was organized on all the 10 days.

The entire management was done by the Bohra Youth committee under the guidance of Iqbal Hussain Rassawala.

- Nazneen Ali Wagpurawala (Kuwait)

डॉ. असगर अली सिंगापुर सम्मेलन में

सिंगापुर विश्वविद्यालय की एशिया यूरोप सेन्टर द्वारा पिछले दिनों एक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी के महासचिव, डॉ. असगर अली इंजिनियर तथा स्वामी अग्नीवेष ने अपना, प्रतिनिधित्व कर अपने व्याख्यान दिये। डॉ. असगर अली ने इस्लाम एवं धर्म निरपेक्षता तथा स्वामी अग्नीवेष ने धर्म निरपेक्षता को वैदिक नज़रिये से प्रस्तुत किया।

इस अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में भारत, सिंगापुर, अमेरीका, स्वीडन, पाकिस्तान, इंग्लैंण्ड तथा अन्य देशों के विद्वानों के साथ कई जानी मानी हस्तियां मौजुद थी। उन्होंने अपने व्याख्यान के बाद लोगों द्वारा पूछे गये प्रश्नों के उत्तर भी दिये।

दाऊदी बोहरा जमाअत, बोहरा यूथ (संस्थान) तथा सैन्ट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी के सदस्यों ने आपको भारत जैसे महान देश का प्रतिनिधित्व करने पर हार्दिक बधाईयाँ दी है।

सम्पादक मण्डल माह फरवरी अंक के समय पर प्रकाशित नही होने के लिये खेद व्यक्त करता है।

Editorial Board:

Editor: Razia Sanwari; Editorial Assistants: Tauseef Hussain Mandiwala, Shabana Meyaji

Advisory Board: Abid Adeeb; Mansoor Ali Bohra; Hussain Udaipuri; Yaqub Ali Zaheer; Mansoor Ali Nathdwarwala; Yusuf R.G.

Published by: Bohra Youth Sansthan, 73, Dr. Zakir Hussain Marg, Udaipur

Tel: 91-0294-2521719; Fax: 91-0294-2524886; email: bohra.journal@hotmail.com

Printed by: National Printers, 124, Chetak Marg, Udaipur - 313001

POSTAL ADDRESS

For more news on Progressive Dawoodi Bohras from over the world, visit http://dawoodi-bohras.com/

Disclaimer: The views published in this publication are solely the contributors'. The Editor and editorial board holds no responsibilities for it.